VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:		Test Code:	1	4	6	0
Name of Candidate	AAKIP KHAN					
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	256964			
Center	Jaipur	Date	13/12/20			

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

16-B, 2nd Floor, Above National Trust Building, Bada Bazar Marg, Old Rajinder Nagar, Delhi-110060

Plot No. 857, 1st Floor, Banda Bahadur Marg (Opp. Punjab & Sindh Bank), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi- 110009

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

[SECTION-A]

लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र न तो एक है और न ही समान।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद यूरोप में अस्थिरता के काल में हिटलर का अधिनायक के रूप में उदय हुआ। हिटलर को जर्मनी की नाजि जनता का सहयोग प्राप्त था। और लोकलुभावनवाद हिटलर का नेता बनने में सहायता कर रहा था।

इसी क्रम में हिटलर द्वारा अपने इसे लोकलुभावन का सहयोग लेकर अल्पसंख्यक यहूदियो को मारना शुरू कर दिया, और मानवता के दौर में विश्व की अब तक सबसे भयानक घटनाऐ सामने आई, जिसने मानवता को काल के अंधेरे में डाल दिया।

उपरोक्त प्रकरण लोकलुभावनवाद से प्रेरित था, लेकिन यहाँ तानाशाही लोकतंत्र के विपरीत शासन था, जो की लोकतंत्र के विपरीत माना जाता है। जो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्पष्ट करता है की लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र न तो एक है और न ही समान।

इस प्रकार लोकलुभावनवाद का तात्पर्य, बहुलवाद के समर्थन से है, या बहुलवादी विचारो के अनुरूप चलने से सरोकार माना जा सकता है। लोकतंत्र व बहुलवाद मे संबंध परिस्थिति के अनुसार समान व असमान पाये जाते है, जो सामाजिक आर्थिक आंकडो से स्पष्ट होता है।

लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र : एक सिक्के के दो विपरीत पहलू

लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र, एक दूसरे के सामाजिक क्षेत्र के मे भी भिन्न भिन्न नजर आते है। जैसे 19वी सदी मे सती प्रथा, विधवा का पुर्नविवाह न करना, बलि प्रथा जैसे अवगुणो को स्वीकार्यता प्राप्त थी, जो की जीवन के स्वतंत्रता,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निजता, आदि जैसे अधिकारो का उल्लंघन है, यही कारण है की तब के समाजसुधारको जैसे राजाराममोहन रॉय आदि ने इनका विरोध किया।

इसी प्रकार सामाजिक क्षेत्र मे ही सर्वोच्च न्यायलय द्वारा नाज फाउंडेशन मामले मे IPC-377 को गैर-अपराधिक घोषित कर LGBTQ को पहचाना गया, और साथ मे यह भी कहा की बहुलवाद विज्ञान नही है।

ऐसा ही प्रकरण बहुसंख्यक व अल्पसंख्यको के बीच हिंसा के दौरान सम्प्रदायवाद से निकलकर आता है, इस संबंध मे महात्मा गाँधी की निम्न पंक्तियाँ उपयुक्त नजर आती है-

मै समझता हूँ की लोकतंत्र अल्पसंख्यको को बहुसंख्यको के समान अधिकार देता है।

इस प्रकार समाज मे विभिन्न तत्व बहुलवाद को लोकतंत्र के विरुद्ध खड़ा करते है।

इसी प्रकार राजनीतिक क्षेत्र मे नेताओ द्वारा चुनावी के समय अल्पसंख्यको या बहुसंख्यको से धर्म के नाम पर वोट मांगना, यह बहुलवाद से प्रेरित हो सकता है, लेकिन लोकतांत्रिक धर्म निरपेक्ष समाज के विरुद्ध नजर आता है।क्योंकी भारतीय सर्वोच्च-न्यायलय और चुनाव आयोग ने इसे असंवैधानिक व अलोकतांत्रिक करार दिया है, जो की S.R. बोम्बई वाद (1994) निर्णय से स्पष्ट होता है जो दर्शाता है की बहुलवाद और लोकतंत्र भिन्न-2 है।

ऐसा ही प्रकरण विकासात्मक नीतियो से स्पष्ट होता है, जैसे सरकार द्वारा लोकलुभावन से प्रेरित हो कर मराठा आरक्षण देना, जो की 50% की न्यायलयी (इंद्रासाहनी वाद) सीमा को पार करता हुआ नजर आता है व असंवैधानिक दिखाई पडता है, ~~हाल~~ ~~द~~

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हाल ही मे अनेको राज्य सरकारो द्वारा रोजगार मे स्थानीयता की सीमा लगाना जबकी भारतीय संविधान के अनुच्छेद 16 मे यह शक्ति केवल संसद को दी गई है जो लोकलुभावन से प्रेरित मगर अलोकतांत्रिक नजर आता है।

इसके अतिरिक्त लोक-लुभावन या दबाव से प्रेरित कदम अपराधिक न्याय प्रणाली मे भी नजर आते है, जैसे हैदराबाद यौनशोषण मामले के बाद पुलिस द्वारा आरोपियो का एन्काउंटर करना जो की कानून के शासन की लोकतांत्रिक प्रणाली की उपेक्षा करता हुआ प्रतीत होता है।

साथ ही मृत्यु दण्ड के मामले मे लोक लुभावन के दबाव मे मृत्यु दण्ड देना जबकी यह जीवन के अधिकार व लोकतंत्र के विरुद्ध है, इसीलिए न्यायालय ने बच्चन सिंह जैसे मामलो मे

इसको स्पष्ट किया है जो स्पष्ट करता है की लोकलुभावन व लोकतंत्र भिन्न भिन्न है।

ऐसा ही प्रकरण, लोकलुभावन के दौरान अपनाई जाने वाली विधियों से स्पष्ट होता है, जैसे हिंसा का सहारा लेकर विरोध करना, सार्वजनिक सम्पत्ती को नुकसान पहुँचाना, उग्रवाद व अलगाववाद को बढ़ावा देना, जो की अलोकतांत्रिक विधियाँ नजर आती है, और इनसे मौलिक कर्तव्यो की अपेक्षा होति है जो लोकतंत्र व लोकलुभावन मे भिन्नता लाता है।

लोकतंत्र व लोकलुभावन मे उपरोक्त भिन्नता के बावजूद कुछ समान तत्व भी नजर आते है, जो इनमे समानता लाने का प्रयास करते है।

लोकतंत्र व लोकलुभावन: एक ही तारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

केस स्टडी :-

लोकतंत्र व लोकलुभावन मे समानता शासन व्यवस्था स्वरूप मे नजर आती है जैसे वर्ष 2011 मे लोकलुभावन के कारण ही लोकपाल व लोकायुक्त अधिनियम आ पाया जो सरकार मे जवाबदेहिता व पारदर्शिता बढाकर लोकतंत्र को सुदृढ़ करता नजर आता है इसी प्रकार ई-शासन मे जन भागीदारी, निर्भया मामले मे विद्रोह और न्याय, MKSS द्वारा RTI के प्रयास और हाल ही मे जयराज व बेनिक्स कस्टडी मृत्यु मे लोक-लुभावन के कारण ही कई लोकतांत्रिक बदलाव की किरण नजर सामने आई है। इसी प्रकार चुनावी प्रक्रिया मे राजनीतिक उद्घोषणा भी लोक-लुभावन के अनुरूप होती है, जो की लोकतंत्र के लिए आवश्यक है, इस संदर्भ मे हमारे पूर्व

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम साहब की पंक्तियाँ उपयुक्त नजर आती है।

सरकार चाहे केन्द्र मे हो या राज्य मे दोनो चुनी जाति है, अतः यह हमारी जिम्मेदारी बनती है की हम यहाँ अच्छे लोगो को चुने।

यह पंक्तियाँ लोकलुभावन के राजनीतिक लोकतांत्रिक महत्व को स्पष्ट करती है।

ऐसी ही समानता लोकतंत्र व लोकलुभावन मे सामाजिक स्तर पर नजर आती है।

जैसे लोकलुभावन के कारण ही फ्रांस मे क्रांति आई, जिससे लोकतांत्रिक बदलाव आए, इसी प्रकार लोकलुभावन से ही महिलाए जागृत हुई और अभी है। जैसे अभियान महिलाधिकार के लिए देखे गये। जो स्पष्ट करता है की लोकलुभावन सकारात्मक सामाजिक लोकतांत्रिक बदलाव के लिए आवश्यक है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

साथ ही साथ सुरक्षात्मक स्तर पर लोककल्याण सरकार से अपनी सुरक्षा तय करवाता है जिससे सरकारे सीमा सुरक्षा, मानवाधिकार से सुरक्षा, पड़ोसी देशो से सुरक्षा, साइबर सुरक्षा आदि को सुनिश्चित करती है।

इसके अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र मे राज्य के नीति निदेशक तत्वो के अनुकूल राज्य लोककल्याण के अनुरूप गरीबी उन्मूलन, रोजगार प्रदान करना, महिलाओ की श्रम बल मे भागीदारी बढ़ाना जैसे प्रकार्य करता है। इस संदर्भ मे स्वामी विवेकानंद की निम्न पंक्तियाँ उपयुक्त नजर आती है–

जब तक लाखो लोग भूख व प्यास से मरते रहेगे मे हर उस व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ, जो शिक्षा पाकर इन पर ध्यान नही देता।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपरोक्त पंक्तियाँ स्वयं लोकलुभावन व विकास दोनों के अनुरूप नजर आती है जो लोकतंत्र के उद्देश्य और लोकलुभावन को समान करती है।

ऐसा ही संबंध लोकलुभावन व पर्यावरणीय लोकतंत्र मे नजर आता है, जैसे हाल ही मे यूरोप मे चले ~~[illegible]~~ फ्राइडे फॉर फ्यूचर आंदोलन जो की लोक-लुभावन व पर्यावरणवाद से प्रेरित होकर सरकारों को जलवायु परिवर्तन के प्रति जवाबदेह बनाती नजर आती है, जिसके पश्चात यूरोप मे कई देशों ने जलवायु आपातकाल भी लगाया।

भारत मे भी चिपको आंदोलन, नियामगिरी खान विद्रोह आदि मे सरकार की पर्यावरणीय जवाबदेहिता को सुनिश्चित किया गया है, जो लोकतंत्र को सुदृढ करती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपरोक्त प्रकरण के बावजूद हमे आगे की राह, आशावादी चुननी चाहिए जो लोकतंत्र व लोकलुभावन दोनो उद्देश्यो की पूर्ति करे।

लोकतंत्र व लोक लुभावन : आगे की राह

इसके लिए हमे सहिष्णुता को प्रोत्साहित करना होगा, जैसा की महात्मा गांधी ने कहा है

सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की सुंदरता व परीक्षा है

साथ ही संघवादी ढाँचे को सुदृढ़ करना होगा, ताकी अल्पसंख्यको को प्रतिनिधित्व मिले, जैसा की सर्वोच्च न्यायलय के पूर्व मुख्य न्यायधीश ने इसे भारतीय विविधता के लिए आवश्यक माना है।

इसके अलावा संवैधानिक नैतिकता पर जोर दिया जाना चाहिए, ताकी व्यक्तिगत अधिकारो व सामूहिक अधिकारो मे समन्वय हो। और लोकतंत्र व लोक लुभावन समान रहे।

लोकतंत्र व लोक लुभावन : आशा की खिड़की

अंत मे आशा की जा सकती है, की हमारा देश सकारात्मक लोक लुभावन को पालन करेगा, जिसमे संविधान के सिद्धांतो के अनुरूप समानता का अधिकार, स्वतंत्रता, सुरक्षा व अखण्डता आदि सभी सुरक्षित होगा जिससे भारतीय समाज विकास की एक नई ऊँचाई को छू सकेगा, जिसके लिए इस भारत रूपी पक्षी ने उड़ान भरी है

इस संबंध मे रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की निम्न पंक्तियाँ उपयुक्त नजर आती है

हमे वो सब मिलेगा जिसके हम लायक है, यदि हम उसे पाने की क्षमता रखता है।

जिससे सर्वे भवन्तु सुखिनो का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा जहाँ हिटलर जैसे तानाशाह न होकर, महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्ति नेतृत्व करेगे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION-B

जलवायु परिवर्तन की रोकथाम: क्या हम सही मार्ग पर है?

Ans वर्ष 2050, जब दुनिया तकनीकी रूप से इतनी विकसित हो गई की उसने अंतरिक्ष मे एक अलग दुनिया बना ली / और उस दुनिया मे समाज के कुछ विशेष अमीर तबके के लोग निवास कर रहे है।

इसी क्रम मे एक मालदीव की छोटी बच्ची आइसा उस आसमान की दुनिया को देखती है, और सोचती है की यह कैसे हुआ की कुछ लोग अलग पृथ्वी से रहने लगे, और जलती हुई पृथ्वी पर मात्र गरीब व पिछड़े लोग रह गये। और यह सोचकर उसकी अर्न्तआत्मा गरज उठती है।

उपरोक्त प्रकरण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जलवायु परिवर्तन के उस भविष्य के पहे को स्पष्ट करता है, जो वर्तमान मे नही हो पा रहे जलवायु परिवर्तन रोकथाम से हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन, जलवायु के औसत तापमान, आर्द्रता, आदि जैसे गुणो मे दीर्घकालिक परिवर्तन से संदर्भ रखता है, पृथ्वी के प्राचीनकाल से यह प्राकृतिक रूप से होता रहा है, लेकिन वर्तमान मे मानवीय कारक इसके पीछे जिम्मेदार है, और उपयुक्त कदम भी इस दिशा के अनुरूप नजर नही आ रहे है

जलवायु परिवर्तन की रोकथाम : निराशा की खिडकी

ऐसे अनेको उदाहरण है जो स्पष्ट करते है की वर्तमान जलवायु परिवर्तन रोकथाम सही मार्ग मे नजर नही आ रहा है, जैसे तापमान का बढना है।

IPCC की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रिपोर्ट के अनुसार यदि तापमान वर्तमान दर से ही बढ़ता रहा तो वर्ष 2040 तक ही यह 2°C तक बढ़ जाएगा, जो स्पष्ट करता है की तापमान नियंत्रण की दिशा मे कुछ भी नही हुआ है। ज्यो अमेजनवनो मे आग व ऑस्ट्रेलियाई बुस फायर से भी स्पष्ट होता है।

इसी प्रकार वर्तमान अतिघटनाऐ भी इस सरोकार को स्पष्ट करती है, जैसे जलवायु जोखिम इन्डेक्स -2018 के अनुसार वर्ष 2001-17 के मध्य लगभग 11500 अतिघटनाऐ हुई, जिनसे लगभग 5,26000 मौते हुई जो भी जलवायु परिवर्तन की रोकथाम की अस्पष्टता को दर्शाता है।

साथ ही महासागरो पर वर्तमान मे पड़ रहे प्रभाव भी इस ओर ही इशारा करते नजर आते है, IPCC की रिपोर्ट के अनुसार महासागरो ने 93% अतिरिक्त हीट ले ली है इनका अम्लीकरण हो रहा है, और एलनीनो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व तालीमा की मात्रती व तीव्रताबढ़ गई है।

इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन रोकथाम की दिशा मे कुछ न होने का परिणाम हिमखण्ड व भूमी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावो से स्पष्ट होता है, आइसलैण्ड के हिमनद पिघल रहे है, बर्फ पिघल रही है और समुद्र स्तर 18cm तक बढ़ गया है।

ऐसे ही परिणाम वर्तमान मे जैव विविधता नुकसान से भी स्पष्ट होते है। हाल ही मे आई वैश्विक जैव विविधता आकलन रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1million प्रजातियो के विलुप्तिकरण का खतरा है, [बम्बल स्क्वी के मिलमी] ऐसा पहला जानवर बना है, जो की जलवायु परिवर्तन के कारण विलुप्त हुआ है।

जलवायु परिवर्तन रोकथाम की दिशा मे, सही मार्ग पर न होना वर्तमान संसाधन दोहन

से भी स्पष्ट होता है, इस संबंध मे महात्मा गांधी जी की निम्न पंक्तियाँ उपयुक्त नजर आती है

पृथ्वी पर हमारी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है पर लालच के लिए नहीं।

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत मे प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1950 के 5000 lit से 1500 तक आ गई है।

उपरोक्त प्रकरण यह स्पष्ट करते है की वर्तमान मे हम जलवायु परिवर्तन की रोकथाम की सही दिशा मे नही है, जिसके पीछे अनेको कारक जिम्मेदार है।

जलवायु परिवर्तन रोकथाम : अप्रभाविता के कारक

जलवायु परिवर्तन रोकथाम के निष्प्रभावी होने का मुख्य कारण वितीयन है, विकासशील देशो पर वित नही है, और विकसित देश पेरिस समझौते के अनुकूल 100 bn US$ के लिए सहमत नही है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसके साथ ही तकनीक हस्तानांतरण भी एक मुद्दा है, क्योंकी विकासशील व अल्पविकसित देशो के पास अनुकूलन के लिए तकनीक नही है, वही विकसित देश इसे सौंपने मे असहमती दिखाते है।

इसके अतिरिक्त देशो मे वर्तमान जलवायु परिवर्तन रोकथाम के लिए राजनैतिक इच्छाशक्ति का भी अभाव है, जैसे USA का पेरिस समझौते से बाहर आना, व अनेको दक्षिण पंथी सरकारो का होना।

साथ ही देशो द्वारा निर्धारित पेरिस समझौते के तहत लक्ष्य भी अपूर्ण है, IPCC की रिपोर्ट के अनुसार इनके पूरा होने पर भी तापमान 2100 तक 3°C तक बढ़ जाएगा। साथ ही इनका क्रियान्वयन का कोई विधिक तंत्र भी नही है।

इसके अतिरिक्त

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भूराजनैतिक विवाद भी देशो मे सहयोगात्मक रवैये को कम करते है, जैसे USA चीन के मध्य, विकसित - विकासशील के मध्य आदि

इसके अतिरिक्त नागरिक समाज का असक्रीय व अशिक्षित होना भी एक कारण है, इसके अलावा देशो के मध्य कार्बन ट्रेडिंग को लेकर मुद्दे आदि विद्यमान है।

और अंत मे वैकल्पिक समाधानो की अल्पता व उनका निम्न शोध आदि इस संबंध मे बाधा खडी करते है। और जलवायु परिवर्तन रोकथाम मे यह दिशा अनेको दुष्परिणामो का कारक बन सकती है।

जलवायु परिवर्तन रोकथाम: निष्प्रभाविता के प्रभाव

जलवायु परिवर्तन निष्प्रभाविता के अनेको दुष्प्रभाव समाजिक, राजनैतिक जैसे क्षेत्रो मे सामने आ सकते है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाजिक प्रभावो मे जलवायु प्रवासियो का खतरा, क्योंकी भूमी की कमी व संसाधन अनउपलब्धता इस मानसिकता को बढ़ावा देगी, जिससे शरणार्थी संकट आ सकता है

साथ ही WHO की रिपोर्ट के अनुसार इससे 2030 तक 2.5 अतिरिक्त मौतो व 2-4 bn US$ अतिरिक्त स्वास्थ्य खर्च की संभावना है।

इसके अतिरिक्त इससे ध्रुवीय देशो को लाभ होगा, और उष्णकटिबंधीय देशो को नुकसान जिससे एक नये प्रकार की असमानता जन्म लेगी और आवास व खाद्य सुरक्षा के मुद्दे सामने आयेगे जो निम्न पंक्ति से स्पष्ट होते है-

पृथ्वी हमारे लिए नही है, बल्कि हम पृथ्वी के लिए है।

जिससे पृथ्वी पर मानव संकट आ सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के आर्थिक प्रभाव भी सामने आयेंगे UNEP की रिपोर्ट के अनुसार भारत को अपनी अवसंरचनात्मक आवश्यकताओं के लिए 2040 तक 4.5 trill$ की आवश्यकता होगी, 2001-17 के मध्य वैश्विक अतिघटनाओं से पहले ही 3.47 trill$ की नुकसान का अनुमान है। इसके अलावा समुद्र स्तर मे परिवर्तन संसाधनों मे कमी व डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुँचायेगा।

इसके अतिरिक्त भू-राजनीतिक प्रभाव देखे जा सकते है जैसे बर्फ पिघलने से नये समुद्री मार्ग खुलेगे, जिनके लिए देशो मे प्रतिस्पर्धा होगी, सीमाओं मे परिवर्तन आयेगे जो समुद्री विवादों को जन्म देगा, साथ ही विश्व मे एक नये प्रकार का भू-राजनीतिक विभाजन भी आ सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

और इसके अलावा पर्यावरणीय प्रभाव भयानक हो सकते है, 6वॉ मास विलुप्तिकरण तीव्र हो सकता है समुद्री अम्लीकरण व हीट से समुद्री शैवाल नष्ट हो सकते है व पूरी समुद्री जैव विविधता नष्ट हो सकती है। खाद्य श्रृंखला टूट सकती है, जैसा की वैश्विक जैव विविधता आकलन मे कहा गया है।

इसके अलावा पर्यावरणीय प्रभावो मे मरुस्थलीकरण मे वृद्धि की संभावना, एक अनुमान के अनुसार इससे 25% ग्रीन हाउस उत्सर्जन होने की संभावना है। साथ ही सूखा व बाढ की तीव्रता मे वृद्धी, चक्रवाती तूफानो की आवृत्ती मे वृद्धी, मानसून मे परिवर्तन आदि हमारे सम्पूर्ण पृथ्वी जगत के पर्यावास को विनष्ट कर सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपरोक्त प्रभावो को रोकने के लिए हमे एक आशाजनक आगे की राह चुनने की आवश्यकता है

जलवायु परिवर्तन रोकथाम: आगे की राह

इसके लिए हमे सामुदायिक भागीदारी जैसे मणिपुर के फैयेंग गाँव जो की भारत का पहला कार्बन पॉजिटिव गाँव है, मे देखी गई, ऐसा ही उदाहरण तरूण भारत संघ NGO, क्लाइमेट फ्यूचर अभियान मे सामने आई

इसके साथ ही साथ विश्व को समझना होगा की यह पृथ्वी हमे विरासत मे नही मिली है, बल्कि हम इसे आने वाली पीढियो से उधार लेते है।

और इसी को ध्यान मे रखते हुए वित्तीयन, तकनीक हस्तानांतरण, द्वीपो पर ध्यान, 2050 तक कार्बन उदासीनता का लक्ष्य, आदि जैसे कदम उठाने होंगे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जलवायु परिवर्तन रोकथाम : आशा की किरण

भविष्य मे आशा की जाति है, की विश्व जलवायु समस्याओ को समझेगा, जिससे पूरी मानवीय सभ्यता अपनी पूर्ण क्षमता से इसे संरक्षित रखेगी और श्रीमति महर टरेसा की निम्न पंक्तियो का पालन करेगी -

मै जो कर सकती हू, वो तुम नही कर सकते, और जो तुम कर सकते हो, वो मै नही कर सकती। लेकिन हम दोनो मिलकर एक महान कार्य कर सकते है।

यह पंक्तियाँ सहयोगी कदम के महत्व को दर्शाती है जिससे प्रत्येक भावसा 2050 मे सुरक्षित होगी,

अंत मे हमे -

कालिदास के जागृत व्यक्तित्व की तरह जागृत हो कर, बची हुई पृथ्वी को संरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए ताकी सभी -

"लोक समस्त! सुखिनो भवन्तु"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

quat — प्रभाव — पृथ्वी हमारे लिए (?) — अंतरराष्ट्रीय

सामाजिक — स्वास्थ्य सुरक्षा

- जलवायु प्रवासी
- स्वास्थ्य (2030 — WHO — 2.5 lac अतिरिक्त मौतें)
- 2–4 bil $ अतिरिक्त खर्च
- असमानता (Bolor conn +ve)
- पिछड़े वर्गों पर
- प्रजातीय संघर्ष

आर्थिक — जल असुरक्षा

- भारत — 3.47 tr$
- India — 2040 — 4.5 tr$ की need
- बिजली
- medic
- smuggling

राजनीतिक

- भू-राजनीतिक विवाद + S.L.R. (समुद्र)
- Resources प्रतिस्पर्धा
- new state
- govt

पर्यावरण — सुरक्षा

- 6 M.E.T.P.
- Fires ... (Bamble Clay melaymies)
- सकड़ी विविधता नष्ट
- etc

सुझाव

- सामुदायिक भागीदारी — मायोंग गाँव; तरुण भारत सिंह — राजेन्द्र प्रसाद; # Tiny way for future
- Vulnerable groups — TALISMAN
- वैश्विक सहमति — वैश्विक कार्रवाई; पेरिस समझौते — 2050 तक carbon neutral
- नवीकरणीय संसाधन — सौर etc (ISA)
- climat funding & Tech Transfer
- Island Countries पर ध्यान

lines / उदाहरण हम इस ... (?)

end → भाषणों

- CHARector
- कालिदास lines — सर्वे भवन्तु सुखिनः / लोक समस्ता सुखिनो भवन्तु

जलवायु परिवर्तन की संकल्पना: स्वास्थ्य सही मार्ग पर है?

Intro — इलिनिनियम किला — रोहद
जोन
वर्ष 2035

9

- Nodyes (3)
- Issue (2)
- प्रभाव (3)
- उपाय (1)

What is C.C

No

अभी/अनिमान

- INDC — प्रवृत्ति (IPCC रिपोर्ट)
- T ↑↑ — IPCC रिपोर्ट
- Extreme events ↑↑ — जलवायुजनित स्वास्थ्य (ऑस्ट्रेलिया/जंगल आग)
- Oceanosphere effect — IPCC रिपोर्ट
- Cryosphere & Land — IPCC Special Report

- B.D. — Loss ↑↑ (Bamboo clay/मिलनीन)
  - 6th mass extinction
  - वैश्विक B.D. आकलन
  - H-A संघर्ष ↑↑
- संसाधन दोहन ↑↑ — marquat
  - जलउपलब्धता (नीति आयोग)

GLS
- ozon depletion only

Issue

- वित्तीय (Cooplus)
- Tech Transfer
- राजनैतिक (इच्छाशक्ति)
- INDC (अपूर्ण)
- राजनीतिक विवाद
- नागरिक समाज (inactive)
- पेरिस समझौते enforcement mechanism
- विकेन्द्रीकरण
- ~~नैतिकता~~ X
- कार्बन ट्रेडिंग मुद्दे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Dis agree

एकदेशन

शासन
- जवाबदेहिता (MKSS, lokpal)
- पारदर्शिता
- न्याय (निर्भया मामला)
- ई-शासन
- CJS में सुधार (जगरम के बेनिस मामला)

राजनीति
- manifesto
- चुनावी प्रक्रिया (APJ Abdul Kalam Quad)

समाज
- सकारात्मक बदलाव (फ्रांस की क्रांति)
- महिलाओं के अधिकारों की रक्षा (मी टू)
- शिक्षा व स्वास्थ्य की माँग
- DPSP
- S.V.V. quat

सुरक्षात्मक
- सुरक्षा
- सीमा सुरक्षा

पर्यावरणीय
- गलत परियोजनाओं का विरोध
- नियामगिरी विद्रोह
- चिपको आंदोलन
- Friday For Future
- clime आपात

आर्थिक
- गरीबीकरण की माँग (DPSP)
- महिला आन्दोलन
- किसान विद्रोह
- कृषि सुधार

end with सुझाव → समन्वय — अल्पसंख्यकों की रक्षा

कानून की उचित प्रक्रिया — संघवाद
पूर्व CJI quat

लेकिन मामला — नागरिक Rights ↔ व्यक्तिगत Rights — सहिष्णुता
संवैधानिक नैतिकता
Lincoln quat

Concl^n
- Conclud — आशा (Const^n provision)
- end with CHARecter & R.V. quat
  "यथो धर्म, तथो जयाह"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र न तो एक है और न ही समान।

Intro → अति जनहित (populism) but anarchy

yes

बहुलवाद (समाज)
↓
but not लोकतंत्र (1)
(S.C. judgmt — LGBTQ)

बहुलवाद → पारंपरिक विश्वास
(सती, विधवा, खाप पंचायत)

सामाजिक devide — (सम्प्रदायवाद)

delhi riots

quat → m.u. quat (अल्पसंख्यक)

राजनीतिक (2)
↓
विभाजनकारी राजनीति (बहुसंख्य — धर्म)
↓
but आचार संहिता के विरुद्ध
- RPA — 1951
- E.C.I
- S.C. judgmnt

— विकास विरुद्ध

rich people (अवसर की समानता)

पुनर्वितरण

विकासात्मक (3)
लोकलुभावन
- आरक्षण की 50% सीमा पार करना (S.C. Indra साहनी judgmn)
- स्थानीय अनिवार्यता
- लोकलुभावन में विशेष वर्गों पर ध्यान (समानता का अधिकार X)

(4)

विधि शासन
→ पुलिस एनकाउंटर (हैदराबाद)
↓ CJS — विरुद्ध
- मृत्यु दण्ड (जीवन के अधिकार)

विधि
- सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान (E.D.)
- उग्रवादी तत्वों का सहारा
- सुरक्षा
- रोड दुर्घटना
आदिवासी के अधिकार